जैविक और कुदरती कृषि का प्रशिक्षण केन्द्र

कल्पवृक्ष फार्म

गाँव – देहेरी, ता.उमरगाँव – 396170, जि. वलसाड-गुजरात. फोन: 0260 – 2995177
मोबाईल: 09723531071 इमेल: abhjaysave@gmail.com वेबसाईट: www.savesanghavi.com

माननीय श्री / श्रीमती

नमस्कार,

जैविक और कुदरती कृषि के द्वारा भरपूर मुनाफा, निरोगी जीवन, पर्यावरण की रक्षा, देशने जो समृध्धी और घन गवाया हैं वह सारा, हम फिरसे वापस कैसे प्राप्त कर पाऐगें? इन सारे प्रश्नो के उत्तर पाने के लिऐ सन १९६० मे मैनें खोज की हुई कृषि के द्वारा सारे के सारे उत्तर प्राप्त कर लिऐ हैं। कम मेहनत, बिना खर्च और भरपूर कमाई करते हुऐ मैंने जैविक कृषिके द्वारा सारे विज्ञानीक ठोस सबुत भी प्राप्त कर लिऐ हैं। मेरे जिवन की इच्छा है कि, मेरी कृषिकी सारी कार्यपध्धती भारत के किसानो की आत्महत्या रोकने, पर्यावरण की रक्षा, देशने जो समृध्धी और धन खोया है वह फिरसे वापस प्राप्त करने में उपयोगी हो, वह इच्छा पूरी करने के हेतुसे, मेरे परिवार - अशोक संघवी और भरत मनसाटा ने मिलकर, मेरे कल्पवृक्ष फार्म पर जैविक और कुदरती कृषि का प्रशिक्षण केन्द्र की शुरुवात की हैं। जनकल्यान के लिऐ अगर मेरी दी हुई कार्यपध्धती आपको उपयोगी लगती हो तो, जागृती के लिए इस प्रत को छापकर लोगों को दें, ऐसी मेरी नम्र विनंती है। **भास्कर सावे**

———————————————————————————————————————

कुछ न कीजिए और खूब कमाईए

ज्यादा तर लोग खाव्ब में भी नहीं सोच सकते कि, जुताई, रासायनिक खाद, जहरिली दवाईयाँ और निराई (खरपतवार) के बिना भी कृषि करना संभव है। सन १९६० से आजतक श्री. भास्कर हिराजी सावे, जो उमरगाँव-गुजरात के किसान है। उनके लिए यह सारा काम कुदरत के चक्रो द्वारा मुफ्त में होतें हैं। पिछले ५५ साल से सावेजी, आधुनिक कृषि की मदद बिनाही सब से अधिक उत्पादन प्राप्त कर रहे हैं।

'कल्पवृक्ष फार्म' के १५ एकड़ भूमि के ऊपर सावेजी पहले आधुनिक कृषि-पद्धति से खेती करते थे, मगर सन १९५७ की साल में उसी कार्य-पद्धति से भारी नुकसान उठाना पड़ा। तीन साल में सावेजी को आधुनिक कृषि के सारे बुरे पहेलुं समझ में आ गये, उन्होंने जाना कि 'खेती में नुकसान आने का कारण कम महेनत या कमजोर जमीन न थी, मगर आधुनिक कृषि की मायाजाल और उसीके साथ जुड़ी हुई कार्य-पद्धति का मुख्य कारण था।'

आधुनिक कृषि कार्य-पद्धति में, ट्रेक्टरों से होनेवाली गहरी जुताई रासायनिक खाद, जहरिली दवाईयों का छीड़काव, बेहद पानी का सिंचन और बारबार होनेवाली निराई से जमीन की रचना और उपजाव शक्ति खत्म हो जाती है। सावेजी को कृषि का सच्चा ज्ञान, कुदरत के चक्र को देखकर और आध्यात्मिक 'जियो और जिने दो' की बातें समझने के बाद आया। सावेजी ने देखा था कि, पहाड़ के उपर ही जंगल का विकास होता है और पेड़-पौधों की जड़े लम्बे और गहराई तक जाती है। जुताई, खाद, पानी, दवा और निराई बिना भी जंगल के पेड़-पौधे हर साल एक समान उत्पादन देते हैं। इस बात का सिर्फ एक ही कारण है कि, जंगल में मानव का कोई भी हस्तक्षेप नही होता।

कुदरत की मदद लेते हुए सन१९६० की साल में सावेजी ने एक छोटा सा प्रयोग किया। उस प्रयोग में सावेजी के खेतों का उत्पादन घटकर ५० प्रतिशत हो गया, फिर भी मुनाफा काफी हुआ! वह कैसे?

रसायणों से भरपूर आधुनिक कृषि में सावेजी को रु. १००/- की कमाई के लिए रु. ८०/- का खर्च होता और मुनाफा रु. २०/- मिलता, जबकि नये प्रयोग में कमाई रु. ५०/- की हुई और सावेजी ने पानी सिंचन के अलावा कुछ नहीं किया इसलिए खर्च सिर्फ रु. १०/- ही हुआ, इस प्रकार सावेजी को रु. ४०/- का मुनाफा हुआ। सिर्फ इतना ही नहीं सावेजी को बिना जहर की निरोगी उपज भी मिली। इस प्रयोग के बाद अनपढ़ मनुष्य भी समझ जाता है कि, उसे ज्यादा उपज जरुरी है या शुद्ध उपज की? साथ ही साथ मुनाफा जरुरी है या फिर खर्च करके बेवकुफ बनानेवाला सिर्फ उत्पादन चाहिए? आधुनिक कृषि का

मायाजाल और अधिक उत्पादन का जब भ्रम टुटा तब बिना खर्च और आधुनिक कृषि से भी ज्यादा और शुद्ध उत्पादन कैसे मिलेगा? इस बात की खोज़ और प्रयोग करने के कामों में सावेजी जुट गये थे।

सावेजी ने संशोधन, निरीक्षण, कुदरत के वैज्ञानिक चक्र, जीवों की मदद, सेन्द्रिय खाद और खुद की कार्य-पद्धति को जोड़कर भारी सफलता प्राप्त की है। 'श्री सावेजी की कृषि-पद्धति' का अनुभव और ज्ञान आज खेती काम के लिए एक वरदान है, क्योंकि जैविक कृषि की उपज़ में शरीर को लगनेवाले सारे पोषक तत्व मौजुद है। उसीसे ही निरोगी जीवन मिलता है, पर्यावरण की रक्षा होती है और सबसे बड़ा फायदा, जीसे लोग अनपढ़ कहते है, वैसे किसान को कम से कम पानी, लागत और कृषि के ज्ञान बिना भी शुद्ध और अधिक उपज़ के साथ भारी मुनाफा भी मिलता है। सावेजी को यह सफलता कई सालों के प्रयोग और अनुभव के बाद मिली है, इसलिए सावेजी बारबार दोहराते है कि 'मेरे खेत ही मेरे लिए स्कुल, कॉलेज और विद्यापीठ हैं। जहाँ मुझे काम करने से सच्चा ज्ञान प्राप्त हुआ कि, 'कुछ न कीजिए और जैविक कृषि के द्वारा खूब कमाईए'।

सावेजी सिर्फ सातवी कक्षा तक पढ़े हुए, एक छोटे किसान है। किसान समाज की भलाई के लिए सावेजी ने किसी भी लालच और अपेक्षा बिना, खुद की खोज के सारे राज लोगों के चरणों में समर्पित किये हैं। 'बिना आचरण उपदेश व्यर्थ है'। यह बात ध्यान में रखते हुए, सावेजी बताते है कि 'किसान किसी भी कार्य-पद्धति से खेती करे, सभी खेती-पद्धति, मुख्यत: पाँच नियमों पर ही काम करते हैं, और वह सभी नियमों में, कुदरत के चक्र, मुफ्त में सभी को मदद करते है।'

१) **जुताई** : कुदरत की फौज, जीस में कीड़े-मकोडे, जीव-जन्तु, मुख्यरुप में केंचुएं जैसे जीवात्मा खुद की जीने की कार्य-पद्धति द्वारा जमीन में सुरंग जैसे छोटे-छोटे छेद करते है इस से हवा-पानी का आना-जाना संभव होता है। साथ ही वहीं जीवात्मा के मल द्वारा मिट्टी उपजाऊ बनती है। इसीलिए 'किसान के सच्चे मित्र केंचुएं' को कहा जाता है, जबकी ट्रेक्टर तेल (डिझल) खाकर मिट्टी और पर्यावरण दोनों को हानी करता है।

२) **खाद** : जमीन की उपजाऊ शक्ति बढ़ा ने के लिए सुखे पत्ते, गोबर, घर से निकला हुआ सब्जी का कचरा (सेन्द्रिय पदार्थ) आदि.... उसीका ही उपयोग खेतों में होता है। यह सेन्द्रिय पदार्थ पेड-पौधों या जमीन के लिए खाद नहीं, मगर पशु और जमीन के अंदर रहनेवाले जीवात्मा का अन्न है, वह इसे खाकर मल द्वारा पेड-पौधों के लिए खाद बनाकर देते है। जब कुदरत की फौजो से खाद मुफ्त में मिलता हो, तो फिर ज़हरीले रासायनिक खाद खरीदने की बेवकुफी कौन करेगा?

३) **पानी** : ज्यादा करके किसान थाले के पास बेहद सिंचन करके जड़ों का गला ही दबा देते हैं और इसी कारण से पानी अनेक फीट की गहराई में गया है। जबकि 'पेड और नाली' साथ में 'क्रोटन पौधा' के उपयोग द्वारा, सिंचन पेड़ से १२ से १५ फीट की दूरी से होता है, इसी से ८० प्रतिशत पानी की बचत होती है। इस कार्य-पद्धति के कारण कुआं और बोरवेल के पानी भंडार में वृद्धि होती है। क्योंकि खेतो में पेड-पौधों को पानी नही सिर्फ नमी जरुरी है।

४) **फसल की रक्षा** : जरुरत होने पर कुदरत की दी हुई सेन्द्रिय चीजों का ही उपयोग करके घोल तैयार करें। जीव-जन्तुं को फसल से दूर रखने के लिए गौमुत्र, नीम, तुलशी और वह उग्र वनस्पति जिसे बकरी भी नहीं खाती, सभी से तैयार किया हुआ घोल का उपयोग करें। वैसे भी कुदरत ने लाल चींटी, मकड़ा, छिपकली, मेंढक जैसे कई जीवात्मा की रचना की है, जो खुद के वजन से भी अधिक जन्तु को एक ही दिन में खा जाते है। घुवड़, गिद्ध, कौआ, चील जैसे पक्षी चूंहों का शिकार करते हैं, उसी प्रकार कुदरत के कई जीव-जन्तुं, पशु-पंछी खुद को दिये हुए काम बखुबी से करते हैं। इसी के साथ एक आध्यात्मिक बात के उपर भी ध्यान दे की, सभी धार्मिक ग्रंथो में लिखा है कि 'हम सब मनुष्य इस संसार में एक रक्षक के रुप में खाली हाथ आये हैं और खाली हाथ लौटना है, इसलिए सुख और शान्ति से जियो और दुसरों को भी जिने दो।' संसार के रचईता ब्रह्मा, विष्णू और महेश प्रभुजी जब खुद के कुदरती चक्र को बराबर चला रहे हैं, तो फिर ज़हरीली दवाईयों का छिड़काव करके, निर्दोष जीव-जन्तु की हत्या करके हम पाप की हम गठ्ठरी क्यों बांधे? की जीस हस्तक्षेप और प्राण हर ने की सज़ा दु:ख के रुप में जीवन में जरूर आती है।

५) **निराई (खरपतवार)** : लगातर उगने वाले घास को किसान सरदर्द और दुश्मन समझते है। मगर सच तो यह है कि, 'घास तो कुदरत का एक बड़ा वरदान है।' कुदरत ने ज़डो को एक शक्ति दी है जिस से वह वनस्पति परिवार के लिए पानी,

कच्चा माल और नाइट्रोजन की गठ़ान प्रदान कर सके। दुश्मन जाना गया हुआ घास धरती माता के लिए 'कपडा' और पेड-पौधों की ज़डों द्वारा सुरक्षीत रखे हुए भंडार को, सूर्य की तेज किरणों से बचाने का काम करते हैं। कुदरत के इस वरदान को कभी उखाड कर फेंकना नहीं, मगर जरुरत होनेपर सर से बाल काटे जातें हैं उसी प्रकार, घास काटकर पशुधन को खाने दिजीए। इसी से गोबर, फसल रक्षा और मनुष्य की बिमारी दुर करनेवाली दवाईयाँ, दूध और ट्रान्सपोर्ट में काम आनेवाले बैल प्राप्त होंगे।

सावेजी तो गांधीबापु के भक्त है और बापु की तरह ही एक समाज और विश्वबंधुत्व की भावना रखते हैं। सावेजी ने खुद के आर्थिक बल के अनुसार, जीतना हो सके उतना जैविक कृषि का प्रचार किया है। मगर आज सिर्फ आध्यात्मिक बातें नहीं, बल्की वैज्ञानिक और कमाई के ठोस सबुत लोग बारबार मांगते है । लोग फार्म की मुलाकात के लिए जरुर आते हैं और बिना खर्च-महेनत से मिलती हुई उपज को देखकर दंग रह जाते हैं, मगर अफसोस यह है कि, किसान आधुनिक कृषि को छोडकर जैविक कृषि को अपनाने से घभराते है। वह भला क्यों? क्योंकि आज का किसान पूरी तरह से आधुनिक कृषि की मायाजाल में फंस चुका है और सावकार और बैंक के कर्जो में सम्पूर्णत: डूब चुका है, इसलिए ड़र रहे हैं की आधुनिक कृषि छोडने से मुशकिलें बढ गई तों? इसीलिए जैविक कृषि की बातें ख्वाब में भी किसान नही सोच सकते है!

सभी यह बात समझते है कि, 'निरोगी जीवन के लिए निरोगी आहार जरुरी है।' मगर आज ज़हरीली, खाद और दवा के छिड़काव के कारण सभी खेतो की उपज जहरीली, कम पोषकवाली और बिना स्वाद की तैयार होती है, जिसे खाने से मानव रोगीष्ट होता है। अब रोग, बीमारी, अशक्ति और विलायती दवा के सहारे इन्सान कबतक और कितने दिनों तक जीवित रहेगा? स्टुडियो बहार / किंग्स सिक्युरीटी प्रिन्टर्स प्रा. लि. मुंबई के श्री. अशोक संघवी २१ वर्ष की आयु में इसी ज़हरीले खुराक के शिकार हुए। पूरे विश्व में जीस रोग का इलाज संभव नही वैसे जोड़ों का दर्द मतलब की वात (रुमेटज़िम) बीमारी उन्हें हुई। तब संघवी ने कुदरती इलाज और बिना ज़हर के आहार पाने के लिए, एक व्यापारी होते हुए भी कृषि का मार्ग अपनाया। मगर संघवी को तो खेती के बारे में अ,ब,क, तक की जानकारी न थी !

जानकारी पाने के लिए संघवी ने 'कल्पवृक्षफार्म' पर सावेजी से मुलाकात ली और जैविक कृषि देखकर भारी प्रभावित हुए। तब संघवी ने 'संघवी फार्म' की २३ एकड़ बंजर भूमिपर, 'श्री सावे जैविक (सेन्द्रिय) कृषि पद्धति' की शुरुआत सन १९८७ में की। अखंड पत्थरोंवाली बंजर जमीन, जहाँ घास का तीनका तक नहीं निकलता, वहाँ कम खर्च, पानी और महेनत से सिर्फ चार महिनों में ही निरोगी सब्जी की उपज, जैविक (सेन्द्रिय) कृषि पद्धति के ठोस सबुत और बहुत बड़ा मुनाफा भी संघवी ने लिया। सावे पद्धति को बखुबी से सिद्ध करने वाले थे, सावेजी के पूत्र श्री नरेश और सुरेश सावे। इस सफलता से संघवी को जैविक कृषि की महत्वता समझ में आई, तब समाज के लाभ के लिए सावे पद्धति के प्रचार का काम संघवी ने भी शुरु किये।

जैविक कृषि और सावेजी की कार्य-पद्धति से संघवी को खेती का ज्ञान प्राप्त हुआ। संघवी ने जाना कि 'पर्यावरण की रक्षा, सभी जीवात्मा के लिए निरोगी जीवन और मनुष्य के लिए समृद्धि पाने का सिर्फ एक ही मार्ग है, सावेजी की सरल जैविक कृषि पद्धति और समाज को हरहाल में इसकि जानकारी मिलनी ही चाहिए।' भारत की कृषि-संस्कृति बचाने, किसानों की आत्महत्या रोकने और पर्यावरण की रक्षा करने का अनुष्ठान पूर्ण करने की भावना रखते हुए, संघवी ने जीवन की एक प्रथम पुस्तक लिखी। इस पुस्तक में ९०० प्रतिशत मुनाफा और सभी नई-पुरानी बीमारी बिना खर्च से छुटकारा पाने की जानकारी दी।

'देखो और फिर विश्वास करो' इस कार्य के लिए सावे-संघवी ने हर शनिवार को फार्मपर आनेका लोंगो को आमंत्रण दिया। देश-विदेश की संस्था और लोगों को जैविक कृषि का विज्ञान, भरपूर उपज और मिलनेवाले मुनाफे के कई ठोस सबुत दिखाकर सावे-संघवी कई सालों से समाज को उनका योगदान दे रहे हैं। उनके इस निस्वार्थ कामों के लिए उन्हें कई एर्वाड भी प्राप्त हुए हैं। सभी लाभ पाने के लिए 'श्री सावे सेन्द्रिय कृषि पद्धति' जो विश्व की प्रथम कार्य-पद्धति है और देश हित के लिए उसे 'पेटन रजीस्ट्री' करना जरुरी था, तब संघवी ने सरकार से मदद की उम्मीद रखी, मगर आजतक सरकार से नाही कोई जवाब मिला और नाही किसी भी प्रकार का प्रोत्साहन मिला। किस कारणों से? सब से बड़ा कारण है आधुनिक कृषि की संस्थाएं (कृषि लोबी) जो जैविक कृषि के प्रचार में बाधा खडी करते हैं।

देश-विदेश की कई संस्था को खुद का खाद, दवा, बीज, ट्रेक्टर आदि....भारत में आधुनिक कृषि के नाम से बेचने है।

इसी कारण पैसों की ताकत से, इश्तेहार द्वारा सभी देश को मायाजाल में बांध रखा है। एकबार आधुनिक विज्ञान से चार गुना उपज दिखाकर, किसान समाज की आँखो में मिट्टी डाल दी और उपज जब घट गई तो, सारा दोष किसानों के सर थोप दीया। यह कहकर कि 'किसान अनपढ़ हैं और खाद-दवा की मात्रा की सही जानकारी नहीं रखता'। फिर भी किसान उनकी मायाजाल से छूट न जाए, इस कारण वे रोज नई योजनाए किसान के सामने रखते हैं। देखा जाए तो विदेश कंपनीयाँ काफी चालाक है। एक तरह सभी की आधुनिक कृषि वस्तुएं उत्पादन के कारखाने है तो दुसरी ओर बीमारी ठीक करने की दवाईयाँ बनाने का उद्योग भी है। जब ज़हरीले आहार द्वारा लोग बीमार होते है, तब पोषक तत्व दे रहे हैं, इस प्रकार का जुठा प्रचार करके, एसिड (प्रिजर्वेटिव) डाले हुए, टीन फूड़, टॉनीक और बीमारी ठीक करने की बहुत सारी दवाईयाँ बेचते हैं, इस प्रकार दोनों हाथों से कमाई करके भारत को लूट ने का काम करते है। यही बात जरा संक्षेप में देखें। कृषि में अधिक उत्पादन लाने के लिए आधुनिक कृषि का जन्म हुआ, उसी तरह ज्यादा दुध और अंडे के लिए जर्सी गाय और बोईलर मुर्गीयां बनाई। इसीके साथसाथ समाज में मेड काऊ, बर्ड फ्लू, केन्सर नपुंसकता और अनेक नई बीमारीयों का जन्म हुआ। इतना ही नही भारत जैसे अहिंसा में माननेवालें देश में आतंकवाद का भी जन्म हुआ।

आज आधुनिक संस्कृति, कृषि और विज्ञान के कारण लोगों के शरीर कमजोर होकर रोगीष्ट हुए है। आधुनिक दवा काफी महंगी है, जो आम आदमी खरीद नही सकता। सब से बडी बात, इस दवाईयों से कोई भी फायदा नहीं मिलता क्योंकि यह सारी दवाईयां कुदरत ने दी हुई शक्ति के विरुद्ध शरीर में काम कर रहीं है। इस बात का एक ठोस सबुत देखीए। बीमारी ठीक करने के लिए दिन-प्रतिदिन दवा की मात्रा अधीक होती है और कई बीमारी में डॉक्टर जिंदगी भर दवाईयाँ खाने की सलाह देते है। यह सभी बातों का मुख्य कारण है, कुदरत से मिले हुए मुफ्त शरीर में कचरा भरना, जीवों और पर्यावरण की और हमारा दूर्लक्ष। इतनी सारी बरबादी के बाद, हमें क्या बोधपाठ मिलता है? सरल शब्दों में इसका उत्तर है 'कुदरती की और लौट चलो।' जिंदा रहने के लिए जरुरी है 'रोटी कपड़ा और मकान।' समझो की कपड़ा और मकान नहीं मिलते तो भी जींदगी बसर होती है, मगर ज़हरीली खुराक खाकर कितने दिनों तक जीवन बसर होगा? इसी कारण निरोगी जीवन के लिए ज़रुरी है जैविक कृषि करना या फिर जैविक कृषि का ही उत्पादन खरीदना। अफसोस तो इस बात का है की, आज भी भारत देश में पर्यावरण के बारे में, बीमारी दूर करने के लिए कुदरती उपचार, आयुवैदिक दवा और पूर्वज की जैविक कृषि का ज्ञान, किसी भी स्कुल या कॉलेज में नहीं देते, इसी कारण मजबुर होकर लोग आधुनिक दवा और कृषि का ही उपयोग कर रहे है।

आज आमदनी से अधिक तो खर्च है, इसीलिए कृषि प्रधान देश के लोगो ने खेती छोड़कर नौकरी का दामन थामा है। किसानो ने ज्यादा उपज की लालच में और कई लोगो ने घरकी जरुरतो को पूरा करने, बैंक से लोन या क्रेडीट कार्ड लिए है। जब लोग कर्ज में डूब जाते है, तब छूटकारा पाने के लिए गधे के समान दिनरात काम करके, बीमारी के शिकार होते हैं। अब निरोगी जीवन की चाहत में डॉक्टर और आधुनिक दवाईयाँ के चुंगल में फसतें है। फिर धन के साथसाथ शरीर के कई महत्व पूर्जे कटवाकर जीवनभर दुखी रहते हैं। इस प्रकार की कठीन परिस्थिति से बचने के लिए सावे-संघवी विनंती कर रहे है कि, 'जैविक कृषि अपनाकर और घी समान पानी का सिंचन करके, हमनें जैसे निरोगी जीवन, सुख, समृद्धि, आनंद और शान्ति का मार्ग चुना है, आप भी चुन लें।' इस बात की सही जानकारी देने हेतु सावे-संघवी भरत मनसाटेने कल्पवृक्ष फार्मपर 'जैविक और कुदरती कृषि का प्रशिक्षण केन्द्र शुरु किया है। वही पर किसानों को कामों के साथसाथ में जैविक कृषि के ठोस सबुत, निरोगी जीवन पाने की जानकारी, किशानने खुद की खराब की हुई जमीन बीना खर्च उपजाऊ बनाने की सारी जानकारी के साथ भरपूर कमाईए का मार्गदर्शन भी मिलता है। हो सके तो आपभी इस प्रशिक्षण केन्द्र का लाभ लीजिए। कृषि-धर्म में लोगों का साथ-सहयोग मिले और भारत विदेशी चुंगल से बचे ऐसे प्रचार की भावना सावे-संघवी आज भी रखते हैं। उनके कार्य की विस्तार पूर्वक जानकारी चाहते हो तो वेबसाईट : www.savesanghavi.com देखें।

जनकल्यान और जागृती के लिए हमने इस प्रत को छापा है।

Ashok V. Sanghavi – Mob : 09821169907
Sanghavi Farm / Kings Security Printers Pvt. Ltd.
23 A, Central Chowpatty Building, Opp. Girgam Chowpatty Sea Face, Mumbai – 400007.
Tel: (022) 23615184 / 23684891 / 23681033 / 23648011 Email: sbkkppl@gmail.com